1.8

हस्तशिल्पों की धरोहर

राष्ट्रीय फोकस समूह

का

आधार पत्र

1.8

हस्तशिल्पों की धरोहर

राष्ट्रीय फोकस समूह
का
आधार पत्र

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-952-9

प्रथम संस्करण
अप्रैल 2009 बैसाख 1931

PD 3T NSY

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2009

रु 20.00

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
होस्डेकेरे हेली एक्सटेंशन
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : *पेय्यटि राजाकुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *शिव कुमार*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *गौतम गांगुली*
संपादक : *नरेश यादव*
उत्पादन : *अरुण चितकारा*

सज्जा एवं आवरण
श्वेता राव

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बंगाल ऑफसैट वर्क्स, 335, खजूर रोड, करोलबाग, नयी दिल्ली 110 005 द्वारा मुद्रित।

सार-संक्षेप

फोकस समूह के उद्देश्य

(i) शिक्षा व्यवस्था में सिद्धांत एवं अभ्यास दोनों के ज़रिए हस्तशिल्प के सांस्कृतिक, सामाजिक और रचनात्मक पहलुओं को शामिल करना।

(ii) यह सुनिश्चित करना कि हस्तशिल्प को पेशेवर कौशल के रूप में प्रस्तुत किया जाए जो रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराने में सहायक हो।

विद्यालयी पाठ्यचर्या में हस्तशिल्पों की धरोहर को शामिल किया जाना क्यों आवश्यक है?

प्रत्येक दो सौ भारतीयों में से एक व्यक्ति शिल्पी है। हस्तशिल्प अद्‌भुत स्वदेशी प्रौद्योगिकी पर आधारित एक उत्पादन प्रक्रिया है। ऐसा नहीं कि यह कोई पुरानी हो चली या इस्तेमाल में नहीं लाने योग्य परंपरा है। **स्कूली पाठ्यचर्या में इस बिंदु पर ज़ोर दिए जाने की ज़रूरत है। साथ ही हस्तशिल्प को एक शौक के बजाय व्यावसायिक कौशल के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए।**

हस्तशिल्प कौशलों का प्रशिक्षण चाहे घर में दिया जाए या पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा के ज़रिए, उसे औद्योगिक प्रशिक्षण के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। इसे अन्य तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा के समान ही समर्थन दिया जाना चाहिए।

हस्तशिल्प कौशलों को अन्य व्यावसायिक प्रशिक्षण के समतुल्य होना चाहिए खासकर पारंपरिक **शिल्प** क्षेत्रों में, इसे उचित तरीके से तैयार पाठ्यचर्या का एक हिस्सा होना चाहिए।

उन क्षेत्रों में जहाँ शिल्प प्रमुख कार्य के रूप में हो, बच्चे इसे पाठ्यचर्या विकल्प के रूप में चुनने में सक्षम हों। ऐसा पाठ्यक्रम विकल्प जो अपने आप में एक विशिष्ट धारा हो जिसमें सहायक कौशल–जैसे उत्पादन डिज़ाइन, पुस्तक रख-रखाव, प्रदर्शन, सौदा करना और उद्यमवृत्ति साथ-साथ सीखे जा सकें।

हस्तशिल्प सिखा सकता है–

- पर्यावरण और विद्यार्थी के बीच संबंधों की समझ-बूझ और एक-दूसरे की परस्पर निर्भरता के बारे में।
- **सामाजिक कौशल** - सहनशीलता, समझ एवं अपनी दुनिया को और समृद्ध करने की दिशा में विविधता की सराहना। इसमें हाशिये पर पहुँचे तथाकथित समूहों के सशक्तीकरण के साधन शामिल हैं।
- **सूचनाओं के साथ क्रिया करने के कौशल** - प्रासंगिक सूचनाओं को ढूँढ़ निकालना और उनका संग्रह करना, उनकी तुलना करना एवं संपूर्ण तथा आंशिक पहलुओं के संबंधों का विश्लेषण करना।
- **तार्किक कौशल** - विचारों के लिए तर्क देना, व्याख्या के लिए सटीक भाषा का इस्तेमाल करना।
- **जाँच कौशल** - प्रश्न पूछना, क्रियाकलापों की योजना बनाना, विचारों में सुधार लाना।
- **रचनात्मक कौशल** - अभिव्यक्ति कला, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीके तलाशना और विद्यालयी परियोजनाओं तथा व्यापार में शामिल होना। उद्यमवृत्ति कौशल लोगों में इस प्रकार की अभिवृत्ति का विकास करते हैं कि लोग परिवर्तन का आनंद ले सकें, जोखिम प्रबंधन का अभ्यास कर सकें तथा अपनी गलतियों से सीख सकें।
- **कार्य संबंधित संस्कृति**

फोकस समूह इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि

- भारतीय हस्तशिल्प और इससे जुड़े लाखों हस्तशिल्पी पारंपरिक ज्ञान एवं स्वदेशी प्रौद्योगिकी का वृहत और महत्वपूर्ण संसाधन हैं।
- इस संसाधन का इस्तेमाल कई तरीकों से शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने में किया जा सकता है।
- हस्तशिल्प को दोनों तरीकों से सिखाया जा सकता है– व्यावसायिक रचनात्मक गतिविधियों की तरह एवं सैद्धांतिक सामाजिक विज्ञान के रूप में।
- हस्तशिल्प को केवल अलग विषय के रूप में ही नहीं पढ़ाया जाना चाहिए बल्कि इसे इतिहास, सामाजिक एवं पर्यावरण अध्ययन, भूगोल, कला एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों के साथ जोड़कर पढ़ाया जाना चाहिए क्योंकि यह भारतीय संस्कृति, सौंदर्य और अर्थव्यवस्था का अटूट हिस्सा रहा है।
- हस्तशिल्प खासकर सभी तरह की परियोजनाओं को व्याख्या करती हुई शिक्षण सामग्री के रूप में और सीखने की युक्ति के रूप में बेहतर बनाने की दिशा में कारगर साबित होते हैं।
- एक बच्चा कोई भी विषय या पेशा क्यों न चुनता हो, शिल्प माध्यम से प्राप्त अनुभव उसके सीखने की प्रक्रिया में सहायक साबित होता है। यह उपयोगी और समृद्ध बनाने वाला होता है। अपने हाथों, वस्तुओं और तकनीकों से काम करना प्रक्रियाओं को समझने में तथा समस्या समाधान में हमारी मदद करते हैं।
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आई.आई.टी.) और विदेश में स्थित तकनीकी संस्थानों में मॉडल के निर्माण एवं कागज़ों को करीने से मोड़कर आकृति बनाने (Origami) के तौर-तरीके का इस्तेमाल इंजीनियरिंग, गणित और भौतिकी की मूल धारणाओं को समझाने में किया जाता है।
- शिक्षकों के अन्य कैडर को शिल्प का प्रशिक्षण देने से अच्छा है - शिल्पियों को प्रशिक्षक एवं शिक्षक के रूप में इस्तेमाल किया जाना।
- हस्तशिल्प की शिक्षा जीवंत अनुभव प्रदान करने वाले अभ्यास के ज़रिए दी जाती है न कि अतीत के बारे में महज बात करने से।
- हस्तशिल्प को कक्षा अभ्यास की तुलना में एक परियोजना के रूप में बेहतर तरीके से पढ़ाया जा सकता है।
- शिल्प की परियोजनाएँ एवं इससे संबंधित परिचर्चा ग्रामीण और शहरी युवाओं को जोड़ने का ज़रिया हो सकती हैं।
- प्रशिक्षकों या महत्वपूर्ण संसाधन व्यक्तियों के रूप में इस्तेमाल होने वाले शिल्पियों को भी उतना ही भत्ता देना चाहिए और वैसी ही सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए जो प्रशिक्षित पेशेवर कर्मियों को मिलती हैं।
- उन ग्रामीण इलाकों में जहाँ पहले से हस्तशिल्प व्यवसाय के रूप में है, विद्यालयों में हस्तशिल्प की अलग-अलग पाठ्यचर्याएँ होनी चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में पहले से ही मौजूद इन हस्तशिल्प व्यवसायों (उद्यमिता, तकनीकी प्रशिक्षण, भाषा कौशल, एकाउंटेंसी, मार्केटिंग, पैकेजिंग) को और आगे बढ़ाया जा सके। शहरी क्षेत्रों में, स्कूलों में शिल्प की शिक्षा वैकल्पिक अनुभव और रचनात्मक निर्गम के रूप में दी जा सकती है।
- शिल्प के शिक्षण में जेंडर, पर्यावरण, समुदाय, जाति आदि पहलुओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है ।
- निर्यात, संग्रहालय प्रबंधनकर्ता, शिक्षक एवं गैर सरकारी संगठन क्षेत्र में हस्तशिल्प महत्वपूर्ण प्रवेश बिंदु एवं परिसंपत्ति बन सकता है।

आवश्यक उपकरण एवं बुनियादी संरचना

मूल जानकारी देने के लिए प्रशिक्षित शिल्पियों का समूह।

विभिन्न पृष्ठभूमियों के प्रशिक्षक एवं शिक्षक, जो हस्तशिल्प विषय में रुचि रखते हों।

विद्यालय में एक ऐसा व्यक्ति हो जो दिए जाने वाले संसाधनों, परियोजनाओं, बाह्य प्रशिक्षकों, शिल्प प्रदर्शनों और क्षेत्रीय दौरों का समन्वय कर सके।

एक ऐसी **शिल्प** प्रयोगशाला हो जिसमें पर्याप्त जगह, सुविधाएँ हों और वह कच्चे मालों से युक्त हो।

आवश्यक संसाधन सामग्री

1. देश के हस्तशिल्प का नक्शा
2. शिल्पकारों एवं हस्तशिल्प संस्थानों की क्षेत्रवार सूची
3. हस्तशिल्प पर एक पुस्तक (मोनोग्राफ़) जिसमें इस विषय की विस्तृत जानकारी हो
4. फ़िल्म और अन्य दृश्य सामग्रियाँ
5. विभिन्न तकनीकों, कौशलों और सामग्रियों से संबंधित मैनुअल/हस्तपुस्तिकाएँ
6. हस्तशिल्प से जुड़े लोगों के लिए अलग मानदंड
7. समूह में कार्य करने के कौशल
8. शिक्षण में अभिप्रेरणा के लिए स्थान बनाना
9. प्रौद्योगिकी और उत्पाद की पुन:शुरुआत
10. विभिन्न सरकारी एजेंसियों के बीच सहसंबंध ।

संसाधनयुक्त व्यक्ति एवं संस्थान जिनसे मदद ली जा सकती है

इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय, सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र (सेंटर फॉर कल्चरल रिसोर्स एंड ट्रेनिंग–सी.सी.आर.टी.), एकलव्य, इंटैक, फैबइंडिया, भारती, जया जेटली, मैपिन, शांतिनिकेतन, चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी), फिल्म्स डिवीज़न, खादी एवं ग्रामोद्योग निगम, नेशनल बुक ट्रस्ट (एन.बी.टी.), दस्तकार, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ फैशन टैक्नोलॉजी, हस्तशिल्प संग्रहालय, राष्ट्रीय संग्रहालय, कैलिको टैक्सटाइल म्यूज़ियम, बाल भवन, भारत भवन, स्पिक–मैके, साशा, भारतीय हस्तशिल्प परिषद्, हस्तशिल्प संस्थान, जयपुर, बुनकर सेवा केंद्र, डीसी हस्तशिल्प एवं हस्तकरघा कार्यालय, गवर्नमेंट डिज़ाइन सेल्स, हस्तशिल्प एवं हस्तकरघा निर्यात निगम एवं केंद्रीय कुटीर उद्योग निगम, दिल्ली हाट, क्राफ्ट्स रिवाइवल ट्रस्ट, श्री एल. सी. जैन, संस्कृति, दक्षिणचित्रा।

कला एवं हस्तशिल्प

फोकस समूह ने अनुशंसा दी है कि इन दोनों विषयों को अलग–अलग करने की अपेक्षा इन्हें एक साथ मिला देना चाहिए और भारतीय हस्तशिल्प कौशल एवं सामग्रियों का इस्तेमाल रेखाचित्र और पेंटिंग आदि के साथ–साथ

बच्चों की रचनात्मकता एवं कलात्मकता विकसित करने में किया जाना चाहिए। डिज़ाइन एक ऐसा महत्वपूर्ण घटक है जिसे दोनों विषयों में शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही विद्यार्थी हस्तशिल्प तकनीक का इस्तेमाल विद्यालय पर्यावरण, कक्षाओं और पोशाकों की डिज़ाइन के लिए कर सकते हैं।

प्रश्न एवं सरोकार

यह किस तरह विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न सामाजिक समूहों की अपेक्षाओं और संदर्भों पर खरा उतरेगा?

क्या हाशिये पर पहुँच चुके लोगों की आवाज़ को जगह देने के मुद्दे पर इसका रुख लचीला होगा?

इससे विविधता और समानता के मुद्दों से कैसे निपटा जाएगा?

क्या 'हस्त शिल्पों की धरोहर'-इस शब्दावली ने युवाओं को पुनरुज्जीवनवादी, दिनांकित संदेश भेजा था?

क्रियान्वयन से जुड़े विचार

- सभी विद्यालयों में हस्तशिल्प प्रयोगशालाएँ
- जूनियर एवं मिडिल विद्यालयों में हस्तशिल्प को सीखने के अनिवार्य क्षेत्र के रूप में शामिल करना एवं उच्चतम माध्यमिक विद्यालयों में (खासकर हस्त शिल्पकला वाले क्षेत्रों में) इसे प्रमुख ऐच्छिक विषय के रूप में रखा जाना चाहिए।
- बच्चों को स्थानीय इतिहास, भौगोलिक स्थितियों, रीति-रिवाजों, पुष्पों, वनस्पतियों, पशुधन और संस्कृति से संबंधी पुरातात्विक हस्तशिल्प के स्थानीय संग्रहालय बनाने की परियोजनाओं पर काम करना चाहिए।
- वार्षिक मेले का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें बच्चों द्वारा विकसित एवं तैयार उत्पादों को बेचने की व्यवस्था हो।
- हस्तशिल्प की दृष्टि से विकसित इलाकों में अवकाश के दिनों में शिविर लगाने की व्यवस्था हो, जहाँ हस्तशिल्पकारों के साथ काम करने का अवसर मिल सके।
- हस्तशिल्पकारों (विद्यालय के बच्चों के अभिभावकों) द्वारा व्याख्यान और प्रदर्शन दिए जाएँ।
- अनुदेशन के माध्यम के रूप में पुतलियों का इस्तेमाल।
- शिल्पकार बच्चे जो हस्तशिल्प पढ़ा सकते हों उनके साथ शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच अनुभवों का आदान-प्रदान हो तथा बच्चों को एक-दूसरे के इलाकों में भी ले जाया जाए।

हस्तशिल्पकारों और हस्तशिल्प की कला को आदर देना इन संस्तुतियों का मुख्य उद्देश्य है। हमारी संबद्ध जानकारी के अनुसार अद्भुत और समृद्ध हस्तशिल्प परंपराओं और उत्पादनकर्ताओं का निरंतर अस्तित्व में रहना भारत की बेजोड़ पूँजी हैं जिसको उस संसार में अपनी पहचान की तलाश है जो ज़्यादा एकरूप और प्रौद्योगिक होता जा रहा है।

'हस्तशिल्पों की धरोहर' पर गठित राष्ट्रीय फोकस समूह के सदस्य

सुश्री लैला तैयबजी (अध्यक्ष)
अध्यक्ष एवं संस्थापक सदस्य
दस्तकार
45-बी, शाहपुर जट
नयी दिल्ली-110049

प्रो. सुदर्शन खन्ना
नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन
अहमदाबाद
गुजरात

श्री सुभाशीष बैनर्जी
निदेशक
सेंटर फॉर कल्चरल रिसोर्सेज एंड ट्रेनिंग
प्लॉट-15ए, सेक्टर-7, द्वारका
पप्पनकलाँ
नयी दिल्ली-110075

श्री एस. के. सिन्हा
निदेशक
खादी कॉर्डिनेशन
खादी एवं ग्राम उद्योग निगम
(के.वी.आई.सी.), ग्रामोदय
3, इरला रोड, विले पारले (पश्चिम)
मुंबई-400056
महाराष्ट्र

प्रोफेसर ज्योतिंद्र जैन
स्कूल ऑफ़ आर्ट्स एंड एस्थेटिक्स
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नयी दिल्ली-110067

सुश्री नवजोत अल्ताफ़
501, ग्रीन एकर्स
पाली हिल रोड (नरगिस दत्त रोड)
बांद्रा, मुंबई-400036
महाराष्ट्र

सुश्री मंदिरा कुमार
सूत्रधार
599, 17-ए क्रॉस, 7वाँ मेन
इंदिरा नगर सेकंड स्टेज
बेंगलुरु-8
कर्नाटक

श्री पुलक दत्त
डिपार्टमेंट ऑफ़ ग्राफ़िक आर्ट्स
कला भवन, विश्वभारती
शांतिनिकेतन-731235
पश्चिम बंगाल

सुश्री शुभा डे
कला विभाग
असम वैली स्कूल
पी. ओ. एवं टी. ओ.-बालीपाड़ा
ज़िला-सोनीतपुर-784101
असम

श्री ओम प्रकाश शर्मा
राष्ट्रीय बाल भवन
कोटला रोड (आई. टी. ओ. के नज़दीक)
नयी दिल्ली-110002

प्रो. किरन देवेंद्र (सदस्य सचिव)
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली-110016

डॉ. ज्योत्सना तिवारी
प्रवक्ता
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली-110016

आमंत्रित सदस्य

प्रो. विजय मूले
(संस्थापक प्रधानाचार्य सी.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी.)
अध्यक्ष, इंडिया डॉक्यूमेंटरी प्रोड्यूसर्स एसोशिएसन
बी-42, फ्रैंड्स कालोनी (पश्चिम)
नयी दिल्ली-110065

डॉ. दशरथ पटेल

अनुवाद सहयोग

1. श्री अनिल चमड़िया लेखक-पत्रकार, सी-251, सेक्टर-19, रोहणी, दिल्ली-110085
2. डॉ. राधा, 4/276, चिरंजीव विहार, गाजियाबाद-201002
3. श्री मनोज मोहन, पी.डी.-64 सी. पीतमपुरा, दिल्ली-110088
4. डॉ. रंजना अरोड़ा, प्रवाचक, पाठ्यचर्या समूह, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

विषय सूची

सार संक्षेप ...v
'हस्तशिल्पों की धरोहर' पर गठित राष्ट्रीय फोकस समूह के सदस्य ...ix

1. कुछ संतुलित तथ्य जो पृष्ठभूमि तैयार करते हैं और हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं ...1
2. फोकस समूह की व्यापक दृष्टि ...1
3. फोकस समूह के उद्देश्य ...1
4. कार्य विधि ...1
5. क्यों हस्तशिल्पों की धरोहर को स्कूली पाठ्यचर्या में शामिल करना चाहिए? ...1
6. हस्तशिल्प-विशिष्ट संस्तुतियाँ ...6
   - 6.1 इतिहास में ...7
   - 6.2 भूगोल एवं पर्यावरण अध्ययन में ...7
   - 6.3 विज्ञान में ...7
   - 6.4 साहित्य में ...8
   - 6.5 कक्षा परियोजनाओं एवं विद्यालयी गतिविधियों में ...8
7. कैरियर एवं नियोजन ...8
8. जेंडर ...8
9. पारिस्थितिकीय ...9
10. आवश्यक औज़ार एवं बुनियादी संरचना ...10
11. प्रत्येक संस्थान के लिए आवश्यक संसाधन सामग्री ...10
12. संसाधनयुक्त व्यक्ति एवं संस्थान जिनसे मदद ली जा सकती है ...10
13. संसाधन ...13
14. प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण ...13
15. मूल्यांकन ...13
16. कला एवं हस्तशिल्प ...14
17. प्रश्न एवं सरोकार ...14
18. पाठ्यचर्या समीक्षा के लिए चर्चा समूह ...14
19. "हम कहाँ से आते हैं? हम क्या हैं? हम कहाँ जा रहे हैं?" ...14
20. क्रियान्वयन से जुड़े विचार ...15

परिशिष्ट 1 ...16

> *"सीखना एक संघटित घटना है। यह पृथक् प्रक्रिया नहीं है।"*
>
> *के. जीनान, डिजाइनर एवं शिल्प शिक्षक*

1. कुछ संतुलित तथ्य जो पृष्ठभूमि तैयार करते हैं और हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं

- विश्व की जनसंख्या का 16 प्रतिशत भारत में है।
- भारत में सकल राष्ट्रीय उत्पाद (ग्रॉस नेशनल प्रोडक्ट-जी. एन. पी.) का 3.8 प्रतिशत खर्च शिक्षा पर ही होता है तथा 15 वर्ष से ऊपर के आयुवर्ग की 46 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर है।
- चूँकि भारत में ज़्यादातर जनसंख्या वृद्धि न्यूनतम पढ़े-लिखे और कम दक्ष लोगों में ही हो रही है, इसलिए ऐसी संभावना है कि रोज़गार बाज़ार में प्रवेश के समय भारत में या तो निरक्षर लोगों की या अल्प शिक्षित युवाओं और बच्चों की बाढ़ होगी।
- देश में 3880 लाख बच्चे 15 वर्ष से कम उम्र के हैं। भारत शिक्षा के मोर्चे पर बड़ी चुनौती का सामना कर रहा है।
- भारत में 54 प्रतिशत वयस्क पढ़-लिख नहीं सकते।
- भारत में रोज़गार के क्षेत्र में हस्तशिल्पकारों का स्थान कृषि के बाद दूसरा है। प्रत्येक 200 भारतीयों में से एक व्यक्ति दस्तकार है।

2. फ़ोकस समूह की व्यापक दृष्टि

आज के भारतीय युवाओं को वैश्विक एवं तेज़ी से विकास की दिशा में अग्रसर समाज की चुनौतियों का सामना करने तथा साथ ही अपनी सांस्कृतिक संपदाओं, परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित करने के योग्य बनाने के लिए एक पूर्ण एवं व्यापक शिक्षा देना।

3. फोकस समूह के उद्देश्य

- शैक्षणिक प्रणाली में सैद्धांतिक रूप से एवं अभ्यास के ज़रिए हस्तशिल्प के सांस्कृतिक, सामाजिक और रचनात्मक पहलुओं को शामिल करना।
- यह सुनिश्चित करना कि हस्तशिल्प को एक पेशेवर कौशल के रूप में देखा जाए, जो रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराने में सहायक हो।

> *जैसा कि किसी ने कहा है, ''मुझे कुछ कहो और मैं भूल जाऊँगा। मुझे कुछ दिखाओ हो सकता है मैं याद न रखूँ। मुझे किसी कार्य में शामिल करो तो मैं उस काम को समझ जाऊँगा।''*

4. कार्य विधि

भारतीयों के विषय में यह आम धारणा है कि हममें सपने देखने की असीम क्षमता है, उसे हकीकत में बदलने की तुलना में। इसलिए हमने ऐसी संस्तुतियाँ देना महत्वपूर्ण समझा जो व्यावहारिक, विशिष्ट एवं पहुँच के अंदर हों; जिन्हें वैयक्तिक अनुभवों, आँकड़ों और मार्गदर्शन का समर्थन प्राप्त हो और जो व्यवस्था की कमज़ोरियों के बदले शक्तियों पर आधारित हों।

ज्ञान एक अनुभव है, सूत्र नहीं।

5. क्यों हस्तशिल्पों की धरोहर को स्कूली पाठ्यचर्या में शामिल करना चाहिए

यह फोकस समूह पूरे भारत के हस्तशिल्प क्षेत्र से जुड़े दो करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, भौगोलिक विस्तार के रूप में ये पूरे भारत को समेटते हैं और तरह-तरह की कार्य-संरचनाओं तथा संस्कृतियों को शामिल करते हैं। जिसमें विभिन्न तकनीको और प्रौद्योगिकीयों, तरह-तरह की सामग्रियों, मिट्टी से लेकर महँगी धातुओं के साथ काम करने वाले हस्तशिल्पकार भी सम्मिलित हैं। कृषि के बाद हस्तशिल्प ही रोज़गार का सबसे बड़ा ज़रिया है। यह देश की अर्थव्यवस्था के पहलुओं- निर्यात राजस्व एवं घरेलू बिक्री में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारकों में से एक है।

इसके अलावा हस्तशिल्प का इस्तेमाल अनेक सामाजिक मुद्दों और जीवन के तरीकों को दर्शाने के जरिए के रूप में भी किया जा सकता है। भारत में हस्तशिल्प की जड़ें इतनी गहरी हैं कि इसका इस्तेमाल सदियों से व्यापक दार्शनिक, तत्वज्ञान एवं सामाजिक अवधारणाओं के रूप में होता रहा है। अनेक शब्दों, पैमानों के रूपों, रंगों और वस्तुओं के मूल में हस्तशिल्प ही है। ज़िंदगी के '*ताने बाने*' से हम सभी अवगत हैं। इसमें जाति, लिंग, धर्म और सामाजिक कार्य सभी की महत्वपूर्ण एवं अलग-अलग भूमिकाएँ हैं। जब हम रणनीति अख़्तियार करते हैं तो सभी भिन्न पहलुओं पर विचार करने की ज़रूरत होती है। *क्या बहिष्करण को जागरूकता में बदला जा सकता है?* इसका कोई व्यापक उत्तर नहीं है- हम केवल इस हस्तशिल्प क्षेत्र की विविधता एवं जटिलता की समझ विकसित करने का प्रयास कर सकते हैं। हमारे समूह का तर्क यह है कि *हस्तशिल्प–सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों रूप से–विद्यालय और समाज के सभी सैक्टर और क्षेत्रों के बच्चों के लिए भावनात्मक, आर्थिक एवं बौद्धिक सशक्तीकरण का मज़बूत माध्यम हो सकता है।*

हस्तशिल्प एवं धरोहर जैसे शब्दों का व्यापक अर्थ है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में वे खासकर भावनाओं को जाग्रत करने वाले होते हैं। शहरी परिवेश में रहने वाले युवाओं के लिए इनके अर्थ उबाने वाले, पुरातन और अप्रासंगिक हो सकते हैं; कुछ औरों के लिए इसके मायने समृद्ध संस्कृति और परंपराओं वाली पाँच हज़ार वर्ष पुरानी सभ्यता से जुड़े हो सकते हैं। इन संस्कृतियों और परंपराओं पर हम अपना मालिकाना हक होने का दावा करते हैं और इसमें कभी भी बदलाव नहीं चाहते। कुछेक लोग तो चाहते हैं कि परंपरा की घड़ी की सूई पूर्व मुगलकालीन भारत से थोड़ा पहले ही रुक जाए जबकि कुछ का मानना है कि हस्तशिल्प न तो कभी स्थिर है और न ही इसे कभी स्थिर होना चाहिए।

यदि कोई भारतीय नागरिक अंतरिक्ष में पहुँच जाता है, सौंदर्य प्रतियोगिता में विजयी होता है या ओलंपिक में रजत पदक पाता है तो समकालीन भारतीय नागरिक बहुत उत्साही हो जाते हैं। सानिया मिर्ज़ा 100 सर्वश्रेष्ठ टेनिस खिलाड़ियों में शामिल होती हैं तो हमारी उत्सुकता बढ़ जाती है। लेकिन कुछ लोग ही ऐसे हैं जो उन लाखों उस्ताद हस्तशिल्पियों की मौजूदगी की सराहना करते हैं जिनका शेष दुनिया में कोई सानी नहीं है।

यह बात कितनी विरोधाभासी है कि जहाँ शिल्प परंपराएँ पहली बार अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में प्रवेश करने वाले ग्रामीण दस्तकारों के लिए एक अकेला और अनोखा आमदनी का जरिया हैं वहीं वे पिछड़ेपन और हीन भावना का भी सामना करते हैं। खासकर ऐसे समय में जब भारत उच्च प्रौद्योगिकी से युक्त औद्योगिकीकरण और वैश्वीकरण के युग में प्रवेश कर रहा है। सक्रिय कार्यकर्ताओं, अर्थशास्त्रियों, नौकरशाहों एवं व्यावसायिक रणनीतिकारों ने शिल्पों और डिजाइन तथा परपंरा के महत्वपूर्ण पहलुओं को सजावटी, संभ्रांतीय एवं परिधीय समझा न कि जीविकोपार्जन के धीरे-धीरे क्षीण होते जरिए के रूप में देखा। हस्तशिल्पियों को वर्तमान एवं भविष्य की अपेक्षा हमारे अतीत की तसवीर पेश करने वाले के रूप में देखा जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि प्रत्येक 200 भारतीयों में से एक व्यक्ति शिल्पकार है। हस्तशिल्प एक उत्पादन प्रक्रिया है। यह एक आश्चर्यजनक एवं स्वदेशी प्रौद्योगिकी का रूप है न कि प्राचीन हो चली परंपरा का। इसके कच्चे माल (बेंत, कपास, मिट्टी, लकड़ी, ऊन, सिल्क, खनिज लवण) न केवल हमारे देश में उपलब्ध हैं बल्कि ये पर्यावरण की दृष्टि से भी लाभप्रद होते हैं। *अनोखे हस्तशिल्प कौशल, तकनीकों, डिज़ाइनों और उत्पादों के अस्तित्व भारत की ताकत हैं, जो सभी स्तरों पर कैरियर के अवसर उपलब्ध कराते हैं। यह इसकी कमज़ोरी नहीं है। विद्यालय की पाठ्यचर्या में इस बिंदु पर ज़ोर दिए जाने तथा इसे शौकिया नहीं बल्कि विशिष्टता हासिल कराने के उद्देश्य से पढ़ाए जाने की आवश्यकता है।*

हम में से वे जो नई सहस्राब्दि पर नज़र टिकाए हैं और भारत के लिए नए दिशा निर्देश की तलाश में हैं उनके लिए हस्तशिल्प और शिल्पकारों की क्षमता कुछ ऐसे पहलू हैं जिनके बारे में नई पीढ़ी को संवेदनशील बनाया जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में हस्तशिल्प एवं

शिल्पियों की क्षमता के बारे में नई पीढ़ी को सचेत किया जाना चाहिए। हमें इस तथ्य को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए कि प्रत्येक दस वर्ष में हम अपने दस प्रतिशत हस्तशिल्पकारों से हाथ धो बैठते हैं।

हमारे फोकस समूह ने जिन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया है उनमें से एक है हस्तशिल्प बहुलता वाले क्षेत्रों में (जहाँ ज़्यादातर हस्तशिल्पी समुदाय के लोग हों) शिक्षा की विशिष्ट धारा को आरंभ करना। भारत में हस्तशिल्पकारों के बच्चों को ही यह चुनाव करना है कि वे या तो अनपढ़ रहते हुए अपने पूर्वजों के कौशल सीखें (इस प्रकार से काम करते हुए और पारिवारिक आय में अपना योगदान देते हुए) या फिर औपचारिक शिक्षा लें। ग्रामीण और राज्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के गिरते स्तर को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस प्रकार की औपचारिक स्कूली शिक्षा उन बच्चों को भविष्य में वास्तव में जीविकोपार्जन के योग्य बनाने में सक्षम नहीं है।

हस्तशिल्प के क्षेत्र में दिए जाने वाले प्रशिक्षण को (प्रशिक्षण भले ही घर पर हो या पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा के अनुरूप हो) औद्योगिक प्रशिक्षण का दर्जा दिया जाना चाहिए और इसे अन्य तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा की तरह ही सहयोग भी प्रदान किया जाना चाहिए।

हस्तशिल्पकला को अन्य व्यावसायिक प्रशिक्षण, खासकर पारंपरिक हस्तशिल्प के क्षेत्र में, के समान दर्जा दिया जाना चाहिए और इसे एक संरचित पाठ्यचर्या का हिस्सा होना चाहिए जिसमें प्रशिक्षकों या अभिभावकों को वेतन दिया जाए न कि बच्चों को।

पारंपरिक कौशल के साथ-साथ पारंपरिक शिक्षा के लिए भी सुविधाएँ मुहैया कराना समान रूप से महत्वपूर्ण मुद्दा है। यह महत्वपूर्ण है कि हस्तशिल्प उत्पादन के मौसम को और कार्य संरचनाओं को ध्यान में रखते हुए सेमेस्टर और स्कूली कार्य घंटों का निर्धारण किया जाए, बहुत से युवा हस्त शिल्पकार स्कूल नहीं जाते क्योंकि स्कूल का समय और स्थान उनको इस तरह का अवसर नहीं दे पाते कि वे दोनों काम (पढ़ाई और पारंपरिक कौशल सीखना) साथ-साथ कर सकें। ज़्यादातर हस्तशिल्प उत्पादन मौसमी प्रक्रिया है जिसमें बाज़ार की माँग के साथ-साथ उतार-चढ़ाव आते रहते है। स्कूल की शर्तें और पाठ्यचर्याएँ इसके अनुसार ही होनी चाहिए।

ऐसे क्षेत्र जहाँ हस्तशिल्प को प्रमुख गतिविधियों के रूप में शामिल किया गया है, वहाँ बच्चों को हस्तशिल्प का चयन पाठ्यक्रम विकल्प के रूप में करने योग्य होना चाहिए। हस्तशिल्प को एक अपने आपमें विशिष्ट धारा का रूप दिया जाना चाहिए जो बच्चों को सहायक कौशल जैसे प्रोडक्ट डिज़ाइन, बुक कीपिंग, डिसप्ले, खरीद फ़रोख्त करना एवं उद्यमिता कौशल सिखा सके।

उदाहरण के लिए हस्तकरघा बुनाई क्षेत्र में जो चीज़ें पढ़ाई जानी चाहिए, वे हैं-

- उद्यमवृत्ति
- धन प्रबंधन
- संचार
- टेक्सटाइल डिज़ाइन
- ड्राफ़्ट्समैनशिप (नक्शानवीसी)
- स्केल ड्रांइग
- हस्तशिल्प का इतिहास
- तकनीकी कौशल
- बुनाई के अन्य तरीके
- विभिन्न प्रकार के धागे एवं गणनाएँ
- अन्य डिज़ाइनरों, कलाकारों और हस्तशिल्पकारों से संपर्क एवं बातचीत

शिल्पकारों को कुशल उद्यमी एवं आर्थिक सहयोगी के रूप में तैयार करने के लिए आवश्यक उपायों के बारे में हम सभी को आत्मचिंतन करना चाहिए और उन्हें कुशल उद्यमियों तथा अर्थिक भागीदारों की तरह आगे ले जाना चाहिए। हस्तशिल्प एवं हस्तशिल्पी समुदाय की कमज़ोरी ढूँढ़ने की अपेक्षा हमें उनमें जागरूकता पैदा करनी चाहिए एवं उन्हें मज़बूत बनाना चाहिए। हमें उनकी सांस्कृतिक चेतना के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। आर्थिक मामले हमारी प्रमुख आवश्यकताएँ हो सकते हैं लेकिन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक पहलुओं में हमें निर्णायक प्रक्रिया पर भी ध्यान देना चाहिए। हस्तशिल्पियों को अपने साथ लेकर चलने की आवश्यकता है। हमें सुनना और बोलना दोनों ही सीखने की आवश्यकता है। बदलाव की दिशा संरक्षण से भागीदारी की तरफ़ होनी चाहिए।

बाल श्रमिक एवं हस्तशिल्प

शिक्षुता की प्राचीन, उत्तम ढंग से नियमित व्यवस्था शिक्षा के वैकल्पिक साधन के रूप में विकसित की जा सकती है न कि दोहन करने वाली व्यवस्था के रूप में। बिना सोचे समझे बच्चों के हस्तशिल्प सीखने पर प्रतिबंध लगाने से उच्च अर्थोपार्जन करने में सक्षम कुशल कार्यबल का निर्माण करने का एकमात्र अवसर हाथ से जाता रहेगा। इससे हम वे अवसर भी खो देंगे जिनसे बढ़ती हुई बेरोज़गारी वाले इस देश में स्वरोज़गार उपलब्ध हो सकें तथा ग्रामीण युवा और विशेषकर घरेलू महिलाओं के लिए भी रोज़गार पैदा किए जा सकें। लेकिन मुझे यह भी कहना है कि कोई बच्चा जो पंद्रह वर्ष की आयु से कम है और विद्यालय में नहीं है, वह बाल श्रमिक है। यह बहुत दुख की बात है कि भारत के हस्तशिल्प क्षेत्र में ज़्यादातर ऐसा होता है कि शिल्पकारों के बच्चों को ही यह चुनाव करना है कि वे या तो अनपढ़ रहते हुए अपने पूर्वजों के कौशल सीखें (इस प्रकार से काम करते हुए और पारिवारिक आय में अपना योगदान देते हुए।) या फिर औपचारिक शिक्षा लें।

ग्रामीण और राज्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के गिरते स्तर को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस प्रकार की औपचारिक स्कूली शिक्षा उन बच्चों को भविष्य में वास्तव में जीविकोपार्जन के योग्य बनाने में सक्षम नहीं है। रणथंभौर का एक ग्रामीण स्कूल शिक्षक अपनी ड्यूटी पर हाज़िर होता है। दैनिक उपस्थिति रज़िस्टर में हस्ताक्षर करता है, और फिर टूरिस्ट गाइड के रूप में जंगलों में चला जाता है!

मेरे लिए यह एक ज़रूरी चिंता है, गरीबी नहीं, जिसका उदाहरण बालश्रम की पैरवी करते हुए दिया जाता है। परंतु क्या बच्चों के लिए वैकल्पिक शिक्षा के अवसर उपलब्ध हैं जो उन्हें उसी तरह के रोज़गार के अवसर प्रदान कर सकें। क्या बालश्रम हस्तांतरित हो सकता है– प्रशिक्षण और सशक्तीकरण के एक गतिमान नए रूप में? मुझे यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि मैं इस मुद्दे को आज पूर्ण रूप से शिल्प क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में देख रही हूँ, विशेषत: पारंपरिक घरेलू उद्योगों में तथा उनमें जो महिलाओं से संबंधित हैं।

शिल्प कौशलों में प्रशिक्षण, चाहे घर में हो या पारंपरिक गुरु-शिष्य संबंध के द्वारा, को औद्योगिक प्रशिक्षण के रूप में पहचाने जाने की आवश्यकता है और उसे उसी तरह का सहयोग दिए जाने की आवश्यकता है जैसा कि तकनीकी और व्यावायिक शिक्षा के दूसरे रूपों को दिया जाता है। परिवार, मास्टर शिल्पकार, सहकारी समिति, संस्थान या गैर सरकारी संस्थान जो कि प्रशिक्षण दे रहें हैं, उन्हें कुछ वृत्ति ज़रूर दी जानी चाहिए ताकि नियोक्ता के बजाय बच्चे को कुछ धन मिल सके जो कि इस अवधि के दौरान कमा सकते हैं। नहीं तो कौशल सिखाने के बहाने बंधक बाल श्रमिकों की परंपरा के आगे हार मान लेने का एक प्रलोभन सा हमेशा ही रहेगा। जैसा कि उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश के कांस्य उद्योग में दिखाई देता है जहाँ यह हस्तशिल्प पारिवारिक पेशा न रह कर एक बड़ी उद्योग गतिविधि में बदलता जा रहा है। दूसरा प्रसिद्ध उदाहरण है कालीन उद्योग। यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय दबाव एवं कानूनी प्रावधान के कारण कुछ बदलाव किए गए हैं। उदाहरण के लिए रगमार्क स्माईलिंग कारपेट कैंपेन, यद्यपि यह अवधारणा या अनुप्रयोग में परिशुद्ध नहीं है, आगे कार्यनीति तैयार करने में एक माड्यूल के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है।

शिल्प कौशलों को पेशेवर प्रशिक्षण के दूसरे रूपों के बराबर होना चाहिए, विशेषकर पारंपरिक हस्तशिल्प क्षेत्रों में उचित ढंग से संचरित पाठ्यचर्या का एक हिस्सा होना चाहिए। जिसमें प्रशिक्षक और अभिभावक भाग लें और उन्हें कौशलों को सिखाने के एवज में पारिश्रमिक दिया जाए न कि वे बच्चों का इस्तेमाल ऐसे मजदूर के रूप में करें जिन्हें मेहनताना नही दिया जाता है। इसी तरह से महत्वपूर्ण है औपचारिक शिक्षा के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराने का मुद्दा तथा साथ ही पारंपरिक कौशलों को सिखाने, सेमेस्टर की योजना बनाने और कार्य संरचनाओं के अनुसार कार्य घंटे निर्धारित करने तथा शिल्प के उत्पादन की उपयुक्तता जैसे मुद्दे भी महत्वपूर्ण हैं। ज़्यादातर युवा शिल्पकार विद्यालय नहीं जा पाते क्योंकि विद्यालय का समय और स्थान इस बात को असंभव कर देते हैं कि वे पढ़ाई के साथ हस्तशिल्पकारी सीख सकें। ज़्यादातर हस्तशिल्पों का उत्पादन एक सामयिक प्रक्रिया है। जिसमें बाज़ारी भावों के हिसाब से उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। विद्यालयी समय और पाठ्यचर्या को इसके अनुसार संघठित किया जा सकता है। भारत जैसे विविधता से परिपूर्ण और बहुआयामी देश में केवल एक ही हल या कार्यविधि नहीं हो सकती है।

– लैला तैयबजी, चाइल्ड लेबर इन क्राफ्ट्स ट्रेडक्राफ्ट वर्कशॉप, 2003

चर्चित शिल्पकार, गणपति सतपति ने हमें चेताया है (पश्चिम बनाम भारतीय पारंपरिक संस्कृति के विषय में), ''अगर हम उन्हें नहीं कहते हैं तो वे हमें कहेंगे।'' हम इसी बात को उलट कर इस तरह ले सकते हैं कि अगर हम हस्तशिल्पकारों की बात नहीं सुनते हैं तो एक समय ऐसा आएगा कि वे हमारी बात सुनने के लिए हमारे बीच नहीं रहेंगे।

शालिनी आडवाणी ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपेरखा से संबंधित अनौपचारिक विचार-विमर्श समूह के सदस्य के नाते मूल्यों पर आठ सुझाव दिए जिससे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में मदद ली जा सकती है। इन सुझावों को विद्यालय के पाठ्यचर्या में हस्तशिल्प शिक्षा को शामिल करने के तर्कों के रूप में भी देखा जा सकता है।

- हस्तशिल्प को किसी व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक, भौतिक एवं मानसिक विकास को आकृति प्रदान करने का ज़रिया बनाया जा सकता है।
- यह सभी के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने का ज़रिया है।
- यह लोकतंत्र का समर्थन करता है और उसके विषय में बताता है 1960 के राज्यनियंत्रणीय तरीके से नहीं वरन् एक ऐसे तरीके से जो व्यक्तियों तथा समुदायों के सशक्तीकरण को बढ़ावा दे।
- यह उत्पादक अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाला होता है।
- यह टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने वाला है।
- यह हमारी पहचान, हमारे संबंधों, खुद को और हमारे व्यापक समूहों को, जिसमें हम जीवन बसर करते हैं, को मूल्य देना सिखाता है।
- यह हमारे समाज की विविधता को बढ़ावा देता है।
- यह उस पर्यावरण को मूल्य प्रदान करता है जिसमें हम रहते हैं।

इसी तरह के शालिनी आडवाणी के अन्त: पाठ्यचर्या कौशलों की सूची भी हमारे उस तर्क का हिस्सा बन सकी जिसमें हम विद्यालयी शिक्षा में हस्तशिल्प को शामिल करने की बात कहते हैं। ये कौशल हैं :

- *विद्यार्थियों को उनके पर्यावरण के साथ संबंधों की सराहना और* एक-दूसरे की परस्पर निर्भरता का कौशल।
- ***सामाजिक कौशल*** - सहनशीलता, समझ एवं अपनी दुनिया को और समृद्ध करने की दिशा में असमानता का मूल्यांकन। इसमें हाशिए पर पहुँचे तथाकथित समूहों का सशक्तीकरण शामिल है।
- **सूचना प्रक्रिया कौशल** - प्रासंगिक सूचनाओं को ढूँढ़ निकालना और उन्हें संग्रहित करना, उनकी तुलना करना एवं संपूर्ण तथा आंशिक पहलुओं के संबंधों की व्याख्या करना।
- **तार्किक कौशल** - विचारों के लिए तर्क देना, व्याख्या के लिए यथार्थ भाषा का इस्तेमाल करना।
- **पूछताछ कौशल** - प्रश्न पूछना, क्रियाकलापों को योजनाबद्ध करना, विचारों में सुधार करना।
- **रचनात्मक कौशल** - अभिव्यक्ति कलाएँ, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीके तलाशना और स्कूली परियोजनाओं तथा व्यापार में शामिल होना। उद्यमिता कौशल इस तरह की अभिवृत्ति प्रोत्साहित करते हैं जिसमें व्यक्ति बदलाव से आंनदित होता है, जोखिम प्रबंधन का अभ्यास करता है और स्वयं की गलतियों से सीखता है।
- *कार्य संबंधी संस्कृति*

फोकस ग्रुप का मत है कि :

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की समीक्षा में पहली बार हस्तशिल्पों की धरोहर को फोकस क्षेत्र के रूप में शामिल किया जाना इस क्षेत्र की महत्ता की पहचान है।
- देश की शिक्षा प्रणाली पर आज इसके प्रभाव की समीक्षा करने का यह एक अनोखा अवसर है।
- चुनौती केवल सार्थक एवं परिवर्तनीय कार्यक्रम विकसित करने की ही नहीं है बल्कि इसके क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने की भी है।
- इसलिए अनुशंसाएँ ऐसी हों जो सरकारी विद्यालयों की स्थिति और उसके संसाधन (मानव एवं वित्तीय) के अनुरूप एवं ग्राह्य हों।
- अनुशंसाएँ ऐसी हों जो माता-पिता तथा अभिभावकों और बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सार्थक सिद्ध हों।

- बाज़ार संचालित समाज में जब तक कि माता-पिता को यह नहीं समझाया जाता कि पाठ्यचर्या बच्चे के पेशागत विकास को बढ़ावा देने वाली है तब तक वे इसका समर्थन नहीं करेंगे।
- मौजूदा शिक्षा प्रणाली में प्रत्येक स्तर पर सार्वजनिक असंतोष एवं मायाजाल चुनौती के साथ-साथ बदलाव लाने का अवसर भी प्रस्तुत करता है

6. हस्तशिल्प-विशिष्ट संस्तुतियाँ

- भारतीय हस्तशिल्प और इससे जुड़े लाखों हस्तशिल्पी पारंपरिक ज्ञान एवं स्वदेशी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत बड़े एवं महत्वपूर्ण संसाधन हैं।
- इस संसाधन का इस्तेमाल कई तरीकों से शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने में किया जा सकता है।
- हस्तशिल्प को दोनों तरह से सिखाया जा सकता है - व्यावसायिक प्रशिक्षण और रचनात्मक गतिविधियों

> *"मुझे और अधिक भुगतान किया जाना चाहिए क्योंकि मैं पहले सोचती हूँ और तब करती हूँ।"*
>
> *कलारक्षा क्राफ्ट्समैन, कच्छ*

के तौर पर और सैद्धांतिक समाज विज्ञान के रूप में।

- हस्तशिल्प को केवल अलग विषय के रूप में ही नहीं पढ़ाया जाना चाहिए बल्कि इसे इतिहास, सामाजिक एवं पर्यावरण अध्ययन, भूगोल, कला एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों के अध्ययन का हिस्सा भी बनाया जाना चाहिए क्योंकि यह भारतीय संस्कृति, सौंदर्य और अर्थव्यवस्था का एकीकृत हिस्सा रहा है।
- हस्तशिल्प सभी तरह की परियोजनाओं को सचित्र शिक्षण सामग्री प्रदान करते हैं और सीखने की युक्ति की तरह उपयोग में आते हैं। इस प्रकार ये इन परियोजनाओं को बेहतर बनाने की दिशा में कारगर साबित होते हैं।
- एक बच्चा कोई भी विषय या पेशा क्यों न चुनता हो, हस्तशिल्प माध्यम उसके सीखने की प्रक्रिया में सहायक साबित होता है। अपने हाथों, वस्तुओं और तकनीकों से काम करना दोनों तरीके से – समझने और समस्याओं के समाधान की दृष्टि से मदद पहुँचाते हैं।

हस्तशिल्प को कैसे अन्य विषयों एवं परियोजनाओं में शामिल किया जा सकता है, इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आई.आई.टी) और विदेश में स्थित तकनीकी संस्थानों में मॉडल के निर्माण एवं कागज़ों को करीने से मोड़कर आकृति बनाने के तौर-तरीके का इस्तेमाल इंजीनियरिंग, गणित और भौतिकी की मूल अवधारणाओं में किया जाता है।
- शिक्षकों के अन्य कैडर को हस्तशिल्प का प्रशिक्षण देने से अच्छा है - शिल्पियों को प्रशिक्षक एवं शिक्षक के रूप में इस्तेमाल किया जाना।
- हस्तशिल्प की शिक्षा जीवन्त अनुभव प्रदान करने वाले अभ्यास के ज़रिए दी जाती है ना कि इतिहास का उद्धार करने के दिखावे के रूप में।
- हस्तशिल्प को कक्षा अभ्यास की तुलना में एक परियोजना के रूप में बेहतर तरीके से पढ़ाया जा सकता है।
- हस्तशिल्प की परियोजनाएँ एवं इससे संबंधित परिचर्चा ग्रामीण और शहरी युवकों को जोड़ने का ज़रिया हो सकती है।
- प्रशिक्षकों या महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में इस्तेमाल होने वाले हस्तशिल्पियों को भी उतना ही भत्ता और वैसी ही सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए, जो दूसरे प्रशिक्षित कर्मियों को मिलती हैं।
- पहले से ही उन ग्रामीण क्षेत्रों जहाँ शिल्प का बोलबाला हो के विद्यालयों और शहरी इलाकों के विद्यालयों में हस्तशिल्प की अलग-अलग पाठ्यचर्याएँ होनी चाहिए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में पहले से ही

मौजूद हस्तशिल्प व्यवसायों (उद्यमिता, तकनीकी प्रशिक्षण, भाषा कौशल, एकाउंटेंसी, मार्केटिंग, पैकेजिंग) को और आगे बढ़ाया जा सके। शहरी क्षेत्रों में हस्तशिल्प की शिक्षा वैकल्पिक अनुभव एवं रचनात्मक निर्गम की स्थापना के नज़रिये से दी जा सके।

- हस्तशिल्प के शिक्षण में जेंडर, पर्यावरण, समुदाय, जाति आदि पहलुओं को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

6.1 इतिहास में

- निरंतरता एवं परिवर्तन का उदाहरण
- लोगों के इतिहास का हिस्सा
- स्वतंत्रता आंदोलन में खादी की भूमिका
- घरों, पोशाकों, रहने/जीवन के तौर तरीके
- ग्रीक एवं रोमन साम्राज्य के साथ कपड़ों, मानव निर्मित वस्तुओं और आभूषणों का व्यापार
- कला संरक्षक के रूप में मंदिर एवं दरबार
- शाहजहाँ के दरबार में कारखाने
- बाटिक एवं इकत कपड़ा हस्तशिल्प – भारत से दक्षिण पूर्व एशिया एवं वापसी में
- नील एवं ब्रिटिश राज में नील की कहानी
- जामेवर शॉल
- हस्तकरघा एवं औद्योगिक क्रांति
- सिंधु घाटी सभ्यता
- मानव निर्मित वस्तुओं के जरिए सामाजिक जीवन की व्याख्या

6.2 भूगोल एवं पर्यावरण अध्ययन में

- स्थानीय कच्चे माल की उपलब्धता पर आधारित स्थानीय हस्तशिल्प परंपराओं का प्रादुर्भाव

> *"आज के विश्व में कौशलों की सफलता ज़रूरी है।"*
>
> *डॉ. साइरस वकील, अध्यक्ष*
>
> *परीक्षा प्रणाली में सुधार–फ़ोकस समूह*

- स्थानीय सामग्रियों का इस्तेमाल
- खनिज एवं वनस्पति रंग
- जल–बुनाई, डाई, ब्लॉक प्रिंटिंग में इस्तेमाल
- पत्थर, लकड़ी, बाँस एवं मिट्टी की उपलब्धता से पारंपरिक घरों का निर्माण
- शहतूश–जातियों का संरक्षण या जीवनयापन का संरक्षण

6.3 विज्ञान में

- ओरिगामी (कागज़ मोड़कर साज–सजावट की जापानी कला)

केस स्टडी - अर्चना कुमारी की कहानी

अर्चना कुमारी उत्तर बिहार के मुज़फ़्फरपुर ज़िले के सर्वाधिक गरीब एवं पिछड़े इलाके के एक छोटे से गाँव की रहने वाली है। चौदह वर्ष की उम्र में उसने विद्यालय की पढ़ाई-लिखाई छोड़ दी और इलाके में पारंपरिक सुजनी कढ़ाई का काम कर कुछ पैसे कमाने में जुट गई। सत्रह वर्ष की आयु में उसके रचनात्मक कौशल की जानकारी अदिति नामक एक गैर सरकारी संगठन (एन. जी.ओ.) और कनाडा के कपड़ा विशेषज्ञ डॉ. स्काई मॉरिसन को मिली, जिन्होंने संयुक्त प्रयास से उसे छात्रवृत्ति देकर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ फैशन टैक्नोलॉजी (निफ्ट) में प्रशिक्षण के लिए भेज दिया। अंग्रेज़ी की जानकारी नहीं होने और शैक्षणिक योग्यता में फिसड्डी रहने के बावजूद उसने अपने सत्र में सर्वश्रेष्ठ डिज़ाइन संग्रह का पुरस्कार हासिल किया और निफ्ट ने आगे के अध्ययन के लिए उसे चुन लिया। उसका कहना है कि वह उसकी हाथ की कारीगरी एवं शिल्प के क्षेत्र में कार्य करने के अनुभव की बदौलत ही वह अन्य बच्चों पर भारी पड़ी है। उसे इस बात का मलाल है कि उसके स्थानीय विद्यालय ने उसे या अन्य बच्चों को इस दिशा में ऐसा कोई शुरुआती आधार प्रदान नहीं किया जिससे वह हस्तशिल्पी महिला एवं उद्यमी के रूप में सशक्त बन सके।

"हम भी धन अर्जित कर सकते हैं लेकिन हम आज भी दूसरों पर निर्भर हैं। ऐसा इसलिए कि हममें शिक्षा की कमी और भाषा की समस्या है।'' - शिवा कश्यप, महिला शिल्पकार, मधुबनी (बिहार)

"मेरे बेटे के दोस्त उसकी इसलिए खिल्ली उड़ाते हैं क्योंकि वह अपनी माँ की सहायता करता है।"

रिनजानी, कसीदा महिला शिल्पकार, इंडोनेशिया (दस्तकार, थ्रेडलाइंस वर्कशॉप 1998)

- संतुलन और अनुपात
- सामग्रियों के रासायनिक गुण
- औज़ार एवं तकनीक
- तपाना/पकाना एवं ढालना

6.4 साहित्य में

- किंवदंती– विश्वकर्मा, इत्यादि
- हस्तशिल्प एवं हस्तकरघा का साहित्यिक उल्लेख
- बुनाई एवं करघा तत्वमीमांसक रूपक के रूप में

6.5 कक्षा परियोजनाओं एवं विद्यालयी गतिविधियों में

- पोस्टर
- नक्शे
- विद्यालय में नाटक के मंचन के लिए मुखौटे, पोशाकें तथा मंच
- नमूने तैयार करना
- विद्यालयी साज-सज्जा
- कागज़ के थैले, हस्तनिर्मित कागज़
- स्थानीय शिल्पों एवं मानव निर्मित वस्तुओं से स्कूल का संग्रहालय विकसित करना
- विद्यालय में डिज़ाइनों मोटिफ़्स एवं अन्य वस्तुओं का अभिलेखागार तैयार करना

7. कैरियर एवं नियोजन

- भारत के हस्तशिल्प कौशल अनोखे एवं आज के मशीनी समाज के प्रमुख अंग हैं।
- निर्यात के क्षेत्र में हस्तशिल्प का सबसे अधिक योगदान है।
- कृषि के बाद हस्तशिल्प रोज़गार का सबसे बड़ा क्षेत्र है।
- वास्तु, अभियंत्रण, डिज़ाइन, फ़ैशन सहित अनेक पेशों में हस्त कौशल उपयोगी हैं।
- कैरियर से जुड़े अन्य क्षेत्रों यथा- निर्यात, संग्रहालय प्रबंधक, शिक्षण एवं गैर सरकारी संगठन क्षेत्र में हस्तशिल्प एक महत्वपूर्ण प्रवेश बिंदु हो सकता है।
- विद्यालयी कैरियर (परामर्श) में इन वास्तविकताओं को उजागर किया जाना चाहिए।
- माता-पिता/शिक्षकों को इसकी वाणिज्यिक क्षमता की समझ होनी आवश्यक है।
- कैरियर के रूप में हस्तशिल्प की क्षमता, खासकर मौजूदा हस्तशिल्प परंपराओं वाले क्षेत्रों में, पर ज़ोर देना महत्वपूर्ण है।
- हस्तशिल्प के वर्चस्व वाले क्षेत्रों में, हस्तशिल्प पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की दक्षता को पेशेवर रूप प्रदान करने में सहायता के लिए डिज़ाइन, उद्यमिता, उसके प्रबंधन एवं बिक्री आदि के बारे में सिखाया जाना चाहिए।

8. जेंडर

हस्तशिल्प और जेंडर का महत्वपूर्ण संबंध रहा है। एक तरफ़ तो हस्तशिल्प परिवार और समाज के भीतर पुरुषों और महिलाओं की भूमिका का सूक्ष्म दर्शन है। पुरुष और महिलाएँ हस्तशिल्प की भिन्न-भिन्न प्रक्रियाओं में एक साथ काम करते हैं। महिलाएँ मिट्टी गूँधती हैं और पुरुष इसे चाक पर रखकर बर्तन तैयार करते हैं, महिलाएँ धागा कातती हैं और पुरुष कपड़े बुनते हैं, महिलाएँ चमड़े की

जूतियों पर कसीदे काढ़ती हैं जबकि पुरुष उसे काटकर सिलते हैं। एक महिला प्रतिदिन बिना कुछ लिए अपने परिवार के भीतर ऐसी बहुत-सी भूमिकाएँ निभाती है।

दूसरी तरफ़ महिलाओं ने ऐसी अनेक हस्तशिल्प कलाओं के क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम किया है जिसे पुरुष शिल्पकारों ने छोड़ दिया है। उदाहरण के लिए, लखनऊ की चिकन इम्ब्रायडरी का काम अब पुरुषों ने लगभग छोड़ दिया है। अब इसे पूरी तरह महिलाएँ ही करती हैं। इसी तरह राजस्थान के अनेक हिस्सों में ब्लॉक प्रिंटिंग का भी यही हाल हुआ है। पिछले दो दशक से अधिक समय से हस्तशिल्प गैर कुशल एवं घरेलू महिलाओं के लिए आय और रोज़गार का सफल जरिया बन चुका है। इस प्रकार यह सामाजिक सशक्तीकरण के अन्य रूपों के लिए उत्प्रेरक का काम करता है। वरिष्ठ कक्षाओं के विद्यार्थियों में इन मुद्दों एवं अवसरों की जागरूकता को हस्तशिल्प की सैद्धांतिक समझ में बुना जाना चाहिए।

"पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता होनी चाहिए एवं सभी प्रकार के पेशे दोनों के लिए खुले होने चाहिए। सभी पेशों का आदर करना चाहिए एवं हस्तशिल्प को एक पेशे के रूप में व्यवहार में लाया जाना चाहिए।" - मारिया गैरानितो, इम्ब्रायडर, मडेरा (दस्तकार थ्रेडलाइंस वर्कशॉप, 1998)

बाल भवन पाठ्यक्रमेतर विकल्प के रूप में हस्तशिल्प की शिक्षा प्रदान करने वाली कुछेक राष्ट्रीय संस्थाओं में से एक है। शिल्पकार द्वारा इसमें किए गए केस अध्ययन से यह पता चला कि बाल भवन की अनेक लड़कियों ने मेंहदी रचने, कृत्रिम फूल बनाने और बाँधनी के कौशल सीखकर उन्हें अपने घर-आधारित व्यवसाय के रूप में अपनाया।

9. पारिस्थितिकीय

हस्तशिल्प कुछेक पेशों में से एक है जो प्राकृतिक पर्यावरण का प्रत्यक्ष परिणाम है। आसपास की प्राकृतिक वस्तुओं– लकड़ी, धातु, मिट्टी, कपास, बेंत और बाँस, सिल्क, लाख आदि की मौजूदगी सर्वाधिक पारंपरिक हस्तशिल्पों के महत्वपूर्ण आधार हैं। आदमी और प्रकृति, आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संतुलन के बीच इस तरह संतुलन बनाए रखने में कृत्रिम ऊर्जा, बुनियादी संरचना या निवेश की बहुत बड़ी मात्रा की आवश्यकता नहीं होती है। इसीलिए हस्तशिल्प आज भी जीवंत है।

ऐसी दुनिया में जहाँ बाहरी संसाधनों पर निर्भरता बढ़ती जा रही है, हस्तशिल्प अनेक पाठ सिखाता है। हालाँकि हस्तशिल्प की शिक्षा इस ताकीद के साथ देनी चाहिए कि इनमें से कच्चे माल के ज़्यादातर स्रोत तेज़ी से समाप्ति की ओर अग्रसर हैं। जंगलों की कटाई हो रही है और उनके स्थान पर नये जंगल नहीं लगाए जा रहे हैं, पानी दूषित हो रहे हैं, अनेक तरह की घासें एवं बेंत के पेड़ उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं, कपास के लिए मशहूर आंध्र प्रदेश के खेतों में अब तंबाकू की खेती की जाने लगी है।

हाथी दाँत, चंदन की लकड़ी तथा शहतूश पर प्रतिबंध लगाने और वन्यजीवों के संरक्षण एवं समाप्त होते प्राकृतिक

"वह झील जहाँ से मैं इत्र के लिए खस लिया करता था अब उस जगह पर गैस की फैक्ट्री है।"

सवाई माधोपुर के पारंपरिक परफ्यूम निर्माता के अनुसार

"रद्दी की अवधारणा आधुनिक है"

टेराकोटा हस्तशिल्पकार, तमिलनाडु

"पशु अपने आवास को खोजते हुए सीखना शुरू कर देते है"

माधव गाडगिल, आवास और अधिगम फोकस समूह के अध्यक्ष

संसाधनों के जीविका पर होने वाले प्रभाव जैसे मुद्दों पर कक्षा में चर्चा किए जाने की ज़रूरत है। इस दिशा में वैकल्पिक उपायों की तलाश करने के लिए शोध एवं विकास कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

10. आवश्यक औज़ार एवं बुनियादी संरचना

- मूल जानकारी देने के लिए प्रशिक्षित शिल्पियों का समूह
- विभिन्न पृष्ठभूमि के प्रशिक्षक एवं शिक्षक जो हस्तशिल्प में रुचि रखते हों
- विद्यालय में एक ऐसा व्यक्ति हो जो निवेशों, परियोजनाओं, बाह्य प्रशिक्षकों, हस्तशिल्प प्रदर्शनों और क्षेत्रीय दौरे का समन्वय कर सके।
- एक ऐसी हस्तशिल्प प्रयोगशाला हो जिसमें पर्याप्त जगह और सुविधा हो तथा जो कच्चे मालों से युक्त हो।

11. प्रत्येक संस्थान के लिए आवश्यक संसाधन सामग्री

1. देश के हस्तशिल्प का नक्शा
2. शिल्पकारों एवं हस्तशिल्प संस्थानों की क्षेत्रवार सूची
3. हस्तशिल्प पर मोनोग्राफ़
4. फिल्म और अन्य दृश्यगत सामग्रियाँ
5. विभिन्न तकनीकों, दक्षता और वस्तुओं से संबंधित मैनुअल/हैंडबुक
6. हस्तशिल्प से जुड़े लोगों के लिए विशेष मानदंड
7. समूह में कार्य करने के आवश्यक कौशल
8. शिक्षा में प्रेरणा प्रदान करने के उपाय
9. प्रौद्योगिकी और उत्पाद की पुनः शुरुआत
10. विभिन्न सरकारी एजेंसियों के बीच संबंध

12. संसाधनयुक्त व्यक्ति एवं संस्थान जिनसे मदद ली जा सकती है

- ***राष्ट्रीय बाल भवन***
  कोटला रोड, नयी दिल्ली-110002
  (इनकी मान्यता प्राप्त शाखाएँ समस्त भारत में हैं।)
- ***भारत भवन***
  जे. स्वामीनाथन मार्ग
  शामला हिल
  भोपाल-462002
  मध्य प्रदेश
  दूरभाषः 91-755-540353, 540398
  फैक्सः 91-755-540353
- ***भारतीय कला केंद्र***
  (दिल्ली तथा अन्य बड़े शहरों में)
- ***केलिको टैक्स्टाइल म्यूज़ियम***
  साराभाई फाउंडेशन, अंडरब्रिज के सामने, शाहीबाग
  अहमदाबाद-380004, गुजरात
  दूरभाषः 91-79-2868172, 2865995
  फैक्सः 91-79-2865759
  ई-मेल Sarafound@icenet.net
- ***चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली***
- ***काउंसिल फॉर कल्चरल रिसोर्सेज एंड ट्रेनिंग (सी.सी.आर.टी) नयी दिल्ली (सांस्कृतिक स्रोत और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली***
- ***सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज़ कॉरपोरेशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड***
  ए, बैरक, ज़नपथ, नयी दिल्ली 110001
  दूरभाषः 23326790/1577
  फैक्सः 23328334
- ***इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ क्राफ्ट एंड डिजाइन***
  जे-8, झलाना इंस्टीट्यूशनल एरिया
  जयपुर 302017
  राजस्थान
  दूरभाषः 91-141-2701203/2701504
  फैक्सः 91-141-2700160
  ई-मेल iicd@datainfosys.net;
  gitika@sancharnet.in
  वेबः www.iicdindia.org
- ***क्राफ़्ट रिवाइवल ट्रस्ट (सी.आर.टी.)***
  1/1खिड़की गाँव
  मालवीय नगर, नयी दिल्ली-110017

दूरभाष 91-11-29545144/29541146
फैक्स: 91-11-29545185
ई-मेल: mail @craftrevival.org
वेब: www.craftrevival.org

- ***क्राफ्ट्स काउंसिल ऑफ इंडिया***
  विजया राजन, अध्यक्ष
  जी.टी. नगर (एफ) "टेंपल ट्रीज़" 37 वेंकटनारायण रोड, चेन्नई 600017
  तमिलनाडु
  दूरभाष: 91-44-24341456
  फैक्स: 91-44-24327931
  ई-मेल: craftscouncili@vsnl.net;
  craft@satyam.net.in
  Web: www.craftscouncilindia.org
- ***क्राफ़्ट म्यूज़ियम***
  प्रगति मैदान, भैरोंसिंह रोड
  नयी दिल्ली-110001
  दूरभाष: 91-11-23371887/23371641
  फैक्स: 91-11-23371515
  ई-मेल: nhhm@vsnl.net
  वेब: www.craftsmuseum.com
- ***दक्षिणचित्र***
  ईस्ट कॉस्ट रोड मट्टकाडू
  चेंगलपेट डिस्ट्रिक्ट 603112
  तमिलनाडु
  दूरभाष: 91-4114-272603
- ***दस्तकार, सोसायटी फॉर क्राफ्ट्स एंड क्राफ्ट्स प्यूपिल***
  सुश्री लैला तैयबजी, अध्यक्ष
  45 बी, शाहपुर जट
  नयी दिल्ली-110049
  दूरभाष: 91-11-26495920/21,
  26494633, 26495948
  फैक्स: 91-11-26495920
  ई-मेल: dastkar@vsnl.net
  laila tyabji@dastkar.org
  वेब: www.dastkar.org
- ***हस्तशिल्प और हथकरघा कार्यालय के विकास आयुक्त***
  नयी दिल्ली, और अन्य राज्यों की राजधानी
  भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय, पश्चिमी खंड, से.-7
  आर. के. पुरम्
  नयी दिल्ली-110066
  दूरभाष: 91-11-26106902,26103562
  फैक्स: 91-11-26163085
  वेब: http: //www.texmin.nic.in
- ***दिल्ली हाट***
  श्री अरविंद मार्ग
  आई.एन.ए. मार्केट के सामने
  नयी दिल्ली-110023
- ***एकलव्य एजुकेशन फाउंडेशन***
  कार्यालय, कोर हाउस, सी. जी. रोड
  एलिसब्रिज
  अहमदाबाद-6
  गुजरात
  दूरभाष: +91-79-6461629
  फैक्स: +91-79-6563681
  ई-मेल: eklavya@ad1.vsnl.net.in
  वेबसाइट: http://www.eklavya.org
- ***फैबइंडिया***
  एन -4, भूतल
  एन. ब्लॉक मार्केट
  ग्रेटर कैलाश पार्ट-1
  नयी दिल्ली-110048
  दूरभाष: +91-11-26212183 / 4/ 5
  ई-मेल: gklinens@fabindia.com;
  gk.delhi@fabindia.com
- ***फिल्म्स डिविज़न***
  सूचना और प्रसारण मंत्रालय
  भारत सरकार
  नयी दिल्ली
- ***गवर्मेंट डिज़ाइन सेल्स***
  वस्त्र मंत्रालय
  नयी दिल्ली एवं अन्य राज्यों की राज़धानी में

- ***हैंडीक्राफ्ट्स एडं हैंडलूम्स एक्सपोर्ट्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लि. (एच.एच.ई.सी.)***
  नयी दिल्ली
- ***इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (आई.एन.टी.ए.सी.एच.)***
  भारतीयम (हुमाँयू किला के निकट)
  निज़ामुद्दीन, नयी दिल्ली-110013
  दूरभाष: 91-11-24632269, 24632267, 24631818
  फैक्स: 91-11-24611290
- ***इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आई. जी.आर.एम.एस.) (नेशनल म्यूज़ियम ऑफ़ मैनकाइंड)***
  पोस्ट बैग न.-2
  शामला हिल्स
  भोपाल-462013
  मध्य प्रदेश
  दूरभाष: 0755-2540319, 0755-2547589
  फैक्स: 0755-2545458, 0755-2542076
  ई-मेल: igmsbpi@mp.nic.in
- ***जया जेटली***
  दस्तकारी हाट समिति,
  6/105 कौशल्या पार्क
  हौज खास, नयी दिल्ली-110016
  दूरभाष: 91-11-23016035
  फैक्स: 91-11-23793397
- ***खादी और ग्रामोद्योग निगम (के. वी. आई. सी.)***
  प्रथम तल, आई.टी.आई. बिल्डिंग,
  कस्तूरबा गाँधी मार्ग
  नयी दिल्ली
  दूरभाष: 91-11-23010221
  फैक्स: 91-11-23012626
  ई-मेल: jsak@sansad.nic.in
- ***ओ. पी. जैन***
  संस्कृति केंद्र
  सी 6/53 सफ़दरजंग डेवलपमेंट एरिया
  नयी दिल्ली-110016
  दूरभाष: 91-11-26961757, 26963226
  फैक्स: 91-11-26853383
  ई-मेल: opjain@giasad101.vsnl.net
- ***एल. सी. जैन***
  डी-5, 12वाँ क्रास
  राजमहल विलास विस्तार
  बेंगलुरु 560080
  कर्नाटक
  दूरभाष: 080-3344113
  ई-मेल: lcjain@bgl.vsnl.net.in
- ***मैपिन पब्लिकेशंस***
  3, सोमनाथ रोड
  उस्मानपुरा
  अहमदाबाद-380013
  गुजरात
- ***नेशनल बुक ट्रस्ट (एन.बी.टी.)***
  नेहरू भवन
  ए-5, इंस्टीट्यूशनल एरिया
  फ़ेज़-II, वसंत कुंज
  नयी दिल्ली-110070
  दूरभाष 91-11-24526164, 24526187
  फैक्स : 91-11-26121883
  ई-मेल: nbtindia@ndb.vsnl.net.in
  वेबसाइट: http//www.nbtindia.org.in
  वसंत कुंज

- ***राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी)***
  श्री अरविंद मार्ग
  नयी दिल्ली-1100016
  फैक्स-91-11-26868419

- ***नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन (एन.आई.डी.)***
  पालडी, अहमदाबाद-380007
  गुजरात: 079-26639692, 26605243
  फैक्स 079-26621167
  ई-मेल: academic@nid.edu, pro@nid.edu, info@nid.edu

- ***नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ फैशन टैक्नोलॉजी (एन. आई. एफ. टी.)***
  (वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार)
  निफ्ट कैंपस, हौज़ खास, गुलमोहर पार्क के निकट
  नयी दिल्ली-110016
  दूरभाष: 011-26965080, 26965059
  फैक्स: 011-26851198, 26851359
- ***राष्ट्रीय संग्रहालय***
  (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
  जनपथ, नयी दिल्ली-110011
  दूरभाष 91-011-23018415, 23019272/237
  वेबसाइट: http://www.nationalmuseumindia.org
- **साशा, कोलकाता**
  स्पिक-मैके, नयी दिल्ली
- ***विश्व भारती, शांतिनिकेतन,*** पश्चिम बंगाल
- ***बुनकर सेवा केंद्र (वीवर्स सर्विस सेंटर्स) (डब्ल्यू. एस. सी)*** वस्त्र मंत्रालय, दिल्ली और अन्य राज्य की राजधानियों में।

13. संसाधन

- संस्थानों को पहचानना
- व्यक्तियों को पहचानना
- नियमित अधिसूचना भेजना
- प्रयोग की गई वस्तुओं की सूची तैयार करना
- प्रामाणिकता सुनिश्चित करना
- हस्तशिल्पों को सूचीबद्ध करना
- डिजाइन एवं मोटिफ़्स की सूची बनाना
- शिल्पकारों के मौखिक इतिहास को संकलित करना
- मोटिफ़्स और डिज़ाइनों की स्थानीय संसाधन पुस्तक तैयार करना (उदाहरण के लिए कोलम, मंडना, बुनना और कढ़ाई के मोटिफ़्स)
- मोटिफ़्स और डिजाइनों के अर्थ और महत्त्व की व्याख्या (उदाहरण के लिए-अल्पना)

स्वयं का संसाधन (स्कूल में कक्षा-कक्ष परियोजनाओं के हिस्से के रूप में विकसित)

14. प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण

इस बात पर सहमति है कि प्रशिक्षकों का चुनाव महत्वपूर्ण पहलू है। सही प्रोत्साहन एवं प्रश्रय के बिना यह परियोजना असफल हो सकती है। हर कोई कला शिक्षकों की भयानक कहानियों से अवगत है जिसमें प्रतिभावान एवं रचनात्मक क्षमता वाले विद्यार्थियों के हितों का भी गला घोंट दिया जाता है।

सर्वप्रथम उपयुक्त प्रशिक्षकों/शिक्षकों की पहचान किए बिना और उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण दिए बगैर क्राफ्ट स्टडीज (हस्तशिल्प अध्ययन) नामक नये पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक शुरू नहीं किया जा सकता है। इस योजना को पहले कुछ विद्यालयों में प्रयोग के तौर पर शुरू किया जाना चाहिए और फिर बाद में उसे सुधार कर अमल में लाना चाहिए।

प्रशिक्षण मॉड्यूल के रूप में नियोजित एवं विकसित किए जाने की आवश्यकता वाले क्षेत्र

1. प्रशिक्षण के लिए आवश्यक घटक पहचानना
2. कैरियर विकल्प पहचानना
3. संसाधन सामग्रियों तथा औज़ारों (शिक्षा की दृष्टि से आवश्यक) की सूची बनाना।
4. पर्याप्त अनुभव सुनिश्चित करना।
5. हस्तशिल्प से संबंधित घटकों की पहचान करना
6. संसाधनयुक्त संस्थाओं और व्यक्तियों के बीच नेटवर्किंग

15. मूल्यांकन

फोकस ग्रुप इस बात पर एकमत है कि कोई औपचारिक परीक्षा या अंक देने की व्यवस्था नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इस क्षेत्र में सफलता और असफलता वंशानुगत दक्षता एवं बच्चों को मिलने वाली प्रेरणा तथा शिक्षक की वस्तुपरक मूल्य प्रणाली पर आंशिक रूप से निर्भर करती थी। लेकिन नियमित मूल्यांकन का कोई प्रारूप अख्तियार करना चाहिए जो कि शिक्षक और पाठ्यक्रम दोनों के लिए स्वमूल्यांकन भी होगा। इन बातों का भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि बच्चे ने कैसा प्रयास किया, उसकी रुचि कैसी थी और उसने चीजों को कैसे निपटाया।

इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है- बच्चों का अनुभव स्तर और उनकी दक्षता एवं रचनात्मकता बढ़ाना। जैसा कि पुलक दत्ता ने कहा है, ''जब बच्चे पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है तो उसकी खुशी छिन जाती है।'' एक ऐसा प्रारूप एवं ऐसी प्रणाली होनी चाहिए जो पूरी तरह कठोर न हो।

16. कला एवं हस्तशिल्प

फोकस ग्रुप ने अनुशंसा की है कि इन दोनों विषयों को अलग-अलग करने की अपेक्षा इन्हें एक साथ मिला देना चाहिए और भारतीय हस्तशिल्प कौशल एवं वस्तुओं का इस्तेमाल रेखाचित्र और पेंटिंग आदि के साथ-साथ बच्चों की रचनात्मकता एवं कलात्मकता विकसित करने में किया जाना चाहिए। डिज़ाइन एक ऐसा महत्वपूर्ण घटक है जिसे दोनों विषयों में शामिल किया जाना चाहिए साथ ही विद्यार्थी हस्तशिल्प तकनीक का इस्तेमाल विद्यालय पर्यावरण, कक्षाओं और पोशाकों की डिज़ाइन के लिए कर सकते हैं।

17. प्रश्न एवं सरोकार

हस्तशिल्प शिक्षा किस तरह विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न सामाजिक समूहों की अपेक्षा और संदर्भों पर खरी उतरेगी?

क्या हाशिए पर पहुँच चुके लोगों की आवाज़ को जगह देने के मुद्दे पर इसका रुख लचीला होगा?

इससे विविधता और समानता के मुद्दों से कैसे निपटा जाएगा?

18. पाठ्यचर्या समीक्षा के लिए चर्चा समूह

- हस्तशिल्प के परिप्रेक्ष्य में धरोहर धरोहर के घटक क्या हैं?
- क्या **'धरोहर'** शब्द युवाओं तक यह गलत संदेश पहुँचाता है कि यह **'मृतप्राय इतिहास'** का उद्धार मात्र है।
- विभिन्न सामाजिक परिवेशों (ग्रामीण/शहरी) में हस्तशिल्प का क्या अर्थ है?
- क्या हस्तशिल्पों की धरोहर के अध्ययन को पारंपरिक भारतीय शिल्पों तक ही सीमित रखना चाहिए या इसे समकालीन एवं गैर स्वदेशी तकनीकों तक भी बढ़ाया जाना चाहिए?
- कोई कैसे हस्तशिल्प अध्ययन को शहरी युवाओं के लिए प्रासंगिक एवं उत्साहवर्द्धक बना सकता है?
- हस्तशिल्प के क्षेत्र में किए गए योगदानों का व्यावहारिक अनुभव कैसे पाठ्यपुस्तकों और मैनुअल में समाहित किया जा सकता है?
- नयी पाठ्यचर्या को संचालित करने वाली क्रियान्वयन एजेंसी की भूमिका और रूप क्या होगा?
- शिक्षकों की गुणवत्ता कैसे निर्धारित की जाएगी?
- पाठ्यचर्या में हस्तशिल्प शिक्षा की जगह कैसे बनाई जाएगी?
- संसाधनों का अभाव जैसे सामग्रियों एवं उपकरणों का क्रय मूल्य, इनसे कैसे निपटा जाएगा?
- नौकरशाहों एवं स्थानीय प्रशासन को हस्तशिल्प शिक्षा के प्रति कैसे संवदेनशील बनाया जाएगा?
- हस्तशिल्प को राजनीतिक-सांस्कृतिक कारणों से गुमराह नहीं किया जाना चाहिए।
- हस्तशिल्प को सफलता नहीं हासिल कर सकने वालों के लिए दूसरी श्रेणी का विकल्प नहीं बनने देना चाहिए।

19. हम कहाँ से आते हैं? हम क्या हैं? हम कहाँ जा रहे हैं?

पॉल गॉग्विन

- बाल भवन के दस्तकार केस अध्ययन के परिणामों और विद्यालयों के हस्तशिल्प संग्रहालय के भ्रमण से इस तथ्य को बल मिलता है कि हस्तशिल्प को स्कूल की शिक्षा का हिस्सा बना देना चाहिए। हस्तशिल्प के जरिए सीखना आसान हो जाता है और इसका इस्तेमाल इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित आदि जैसे विषयों की शिक्षा प्रदान करने में किया जा सकता है।
- बच्चे हस्तशिल्प के ज़रिए अपनी सांस्कृतिक विरासत का अनुभव कर सकते हैं।
- हस्तशिल्प आधारित प्रशिक्षण व्यावसायिक हो सकते हैं और उत्तरवर्ती जीवन में इनका इस्तेमाल जीविका अर्जित करने में किया जा सकता है।

- हस्तशिल्प बच्चों को ऐसे रास्ते प्रदान करता है जिसमें वे शब्दों की ज़रूरत महसूस किए बिना और सज़ा के डर के बिना अपने आपको अभिव्यक्त कर सकते हैं।
- हस्तशिल्प बच्चों की वंशानुगत रचनात्मकता को बाहर लाता है। खासकर यदि उन्हें इस बात के लिए मुक्त कर दिया जाए कि वे क्या और कब सीखना चाहते हैं।
- रचनात्मक प्रतिभा को निखारना महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालयों में मुख्य रूप से अकादमिक अवयवों पर ध्यान दिया जाता है। यदि कोई बच्चा गणित में अच्छा नहीं कर रहा है तो उसे असफलता का अहसास करने के लिए छोड़ने के बजाय अन्य क्षेत्रों में लगाया जाना चाहिए।
- गैर औपचारिक विधि अख्तियार करने के कारण बाल भवन में सीखना एक आनंदमयी अहसास है। यदि हस्तशिल्प को नियमित पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है तो इस बात को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।
- पारंपरिक हस्तशिल्पकारों को इन विद्यालयों में शिक्षण के कार्य में लगाने से न केवल उन्हें रोज़गार मिल जाएगा बल्कि इससे यह भी सुनिश्चित होगा कि हस्तशिल्प का अध्यापन देश की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के लिहाज से सही है। उदाहरण के लिए, वे क्रॉस स्टिच इंब्रायडरी के लाभों को बढ़ा चढ़ाकर व्यक्त करने के बजाय मधुबनी पेंटिंग के बारे में बता सकते हैं।
- बच्चों को पारंपरिक हस्तशिल्प की शिक्षा प्रदान करने से यह सुनिश्चित हो जाएगा कि ये परंपराएँ समाप्त नहीं होंगी। एक अध्यापक ने कहा है, "ऐसा वक्त नहीं आने देना चाहिए कि विदेशी लोग भारत आकर हमारी ही हस्तशिल्प कला के बारे में हमें पढ़ाएँ।"

20. क्रियान्वयन से जुड़े विचार

- सभी विद्यालयों में हस्तशिल्प प्रयोगशालाएँ स्थापित करना।
- जूनियर एवं मिडिल विद्यालयों में हस्तशिल्प को अनिवार्य करना एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में (खासकर विकसित हस्तशिल्प कला वाले क्षेत्रों में) इसे प्रमुख ऐच्छिक विषय के रूप में रखना।
- बच्चों को स्थानीय इतिहास, भौगोलिक स्थितियों, रीति-रिवाजों, पुष्पों और वनस्पतियों, कपड़ों और पोशाकों और संस्कारों से संबंधी पुरातात्विक हस्तशिल्प के बनाने की स्थानीय हस्तशिल्प संग्रहालय से संबद्ध परियोजनाओं पर काम करना चाहिए।
- वार्षिक मेले का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें बच्चों द्वारा विकसित एवं तैयार उत्पादों को बेचने की व्यवस्था हो।
- हस्तशिल्प की दृष्टि से विकसित इलाकों में अवकाश के दिनों में शिविर लगाने की व्यवस्था हो जहाँ हस्तशिल्पकारों के साथ काम का अवसर मिल सके।
- हस्तशिल्पकारों (विशेषकर उस अवस्था में जहाँ वे विद्यालय के बच्चों के अभिभावक हों) द्वारा व्याख्यान और प्रदर्शन दिए जाएँ।
- अनुदेशन के माध्यम के रूप में पुतलियों का इस्तेमाल।
- हस्तशिल्पकार बच्चे जो पढ़ा सकते हों उनके साथ शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के बीच अनुभवों का आदान-प्रदान हो तथा बच्चों को एक दूसरे के इलाकों में भी ले जाया जाए।

हस्तशिल्पकारों के प्रति आदर भाव एवं दस्तकारी कला तथा कौशलों के प्रति प्रशंसा की भावना का विकास करना इन अनुशंसाओं का मुख्य उद्देश्य है।

हमारी संबद्ध जानकारी के अनुसार अद्भुत और समृद्ध हस्तशिल्प परंपराएँ एवं कुशल तथा प्रतिभाशाली हस्तशिल्पकार भारत की बेजोड़ पूँजी हैं जिसको उस संसार में अपनी पहचान की तलाश है जो ज़्यादा एकरूप और प्रौद्योगिक होता जा रहा है।

परिशिष्ट 1

बच्चे के विकास की विविध अवस्थाओं में हस्तशिल्प की व्याख्या संबंधी मॉड्यूल :

स्कूली व्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर हस्तशिल्प शिक्षण के लिए एक मॉड्यूल

कुम्हारी	एक सप्ताह में एक दोपहर	**आवश्यक ज़रूरी संसाधन**	
स्तर	**कक्षायी गतिविधि**		
प्रलेखन			साँचा
6–10 वर्ष	सामाग्री का इस्तेमाल कुंडलीकरण (कॉयलिंग) चापना, स्वतंत्र रूप से मॉडलिंग	शिल्प प्रयोगशाला मिट्टी, उपकरण	प्रकार खिलौने, सजावटी नमूने
11–14 वर्ष	चक्के पर फेंकना रूप और कार्य	चक्का, पेशेवर कुम्हार प्रदर्शन के लिए	
15–16 वर्ष	आग में पकाना, चमकाना	भट्ठी	
16–18 वर्ष	कुम्हार की कार्यशाला के दौरे, प्रदर्शनियाँ, टाइल बनना, स्थानीय कुम्हारी परंपराओं का दस्तावेज बनाना, तरह–तरह के बर्तनों के बारे में लिखना कुम्हारी के संदर्भों का शोध करना	ट्रांसपोर्ट, समुदायों में दौरा स्कूलों में संसाधन व्यक्ति जो कि इनका समन्वयन करे साहित्यिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक निवेश	
कागज़			
6–10 वर्ष	फाड़ना/पैबंद तथा चिपकाना/कोलाज़ पट्टियाँ बुनना, लपेटना सजावटी कड़ियाँ,	गोंद, कागज़ (रद्दी कागज़, टिश्यू, कार्डबोर्ड) मैथी पाउडर, इमली के बीज मक्के का आटा, चॉक पाउडर	भारत और चीन में कागज़ बनाने का इतिहास
11–14 वर्ष	ओरिगामी पेपरमैशी स्टेंशिलिंग मुद्रण	गोबर पेंट्स बुरादा स्क्रीन प्रिंटिग के उपकरण लुगदी बनाने का यंत्र,	
15–16 वर्ष	मॉडल बनाना, पेपर की मूर्तिकला मोबाइल्स, पंतग बनाना, फूल बनाना कठपुतलियाँ, मुखोटे, खिलौने, कोस्टर्स और मैट्स पेपर मेकिंग, मारबलिंग	बाल्टियाँ, पानी	
16–18 वर्ष	बुक बाइंडिंग		
स्कूली	पोस्टर्स, चार्ट बनाना		
परियोजनाएँ	नक्शा बनाना नाटकों के लिए सेट एवं पोशाकें बेकार सामग्री और अखबारों से कागज़ के बैग (बस्ते) बनाना		